द्वितीय सेमेस्टर, हिन्दी (एम.ए.)

C.C. – 5..

हिन्दी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल (भारतेन्दु युग से अब तक)

नयी कहानी आंदोलन और उसके बाद की कहानी

स्वतंत्रता के आसपास के वर्षों को नवलेखन का काल माना जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश विभाजन से हुए सांप्रदायिक फसाद, शरणार्थियों की समस्या, सामंतवादी–अलगाव का कुटिल षड्यंत्र, प्रजातंत्रीय व्यवस्था और सामंतवादी जीवन मूल्यों की टकराहट आदि समस्याओं से धूमिल मानसिकता में नयी कहानी का जन्म हुआ। मुख्यतः 1950 ई० के बाद एक नव प्रवर्तित आंदोलन को नयी कहानी की संज्ञा दी गयी। नयी कहानी में मध्यवर्गीय मूल्यबोध समकालीन जीवन की पहचान, स्थापित नैतिक बोध को चुनौती, आधुनिकता बोध की चुनौती, सांकेतिकता, सर्जनात्मक भाषा एवं सबल अभिव्यंजना शैली तथा नयी व्यवस्था के प्रति आशा, आस्था, जन–मानस में भी उसके साकार न हो पाने की पीड़ा भी है। इसी परिवेश में नयी कहानी अपनी पहचान बनाती हुई विकसित होती रही है।

नयी कहानी के प्रवर्तकों में से प्रमुख नाम हैं–मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी, निर्मल वर्मा, उषा प्रियंवदा आदि।

वस्तुतः नयी कहानी की कहानियाँ अपने समय के जीवन को समग्रता से पकड़ने की कोशिश करती है। गाँव हो या कस्बा, नगर हो या महानगर, सब के जीवन उनको विसंगतियों उनके मूल्यों–मर्यादाओं और उनमें आने वाले व्यापक परिवर्तनों को नयी कहानी की कहानीकारों बड़ी बारीकी से चित्रित किए हैं। इस संदर्भ में अमरकांत की कहानी–'जिंदगी और जोंक', 'देश के लोग', 'मित्र–मिलन' आदि कहानियों में आर्थिक परिस्थितियों से संघर्षरत निम्न तथा मध्य वर्ग की पीड़ा एवं घुटन का चित्रण हुआ है। कमलेश्वर की 'कस्बे का आदमी', 'राजा निरबंसिया', 'खोई हुई दिशाएँ', 'माँस का दरिया', 'बयान' आदि कहानियाँ कस्बे से शुरू होकर महानगर तक स्वाभाभिक रूप में विकसित होते हुए आधुनिक संवेदना का प्रतिनिधित्व करती है। निर्मल वर्मा की कहानियों में व्यक्ति के अंतर्मन की स्थितियाँ यथार्थ के क्षणों एवं एकांतिक

अनुभूतियों का चित्रण पाया जाता है। 'परिंदे', 'जलती झाड़ी', 'पिछली गर्मियों में', 'बीच बहस में' आदि उनकी चर्चित कहानियाँ हैं। फणीश्वरनाथ रेणू इन पीढ़ी के श्रेष्ठ कहानीकार है। इनकी कहानियों में आँचलिकता और ग्रामीण परिवेश का यथार्थ चित्रण है। 'डुमरी', 'अग्निखोर', 'आदिम रात्री की महक', 'अच्छे आदमी', आदि कहानियाँ है। मन्नू भंडारी की कहानियाँ मुख्यतः भारतीय नारी की नियति को वह विभिन्न संदर्भों में देखती और परखती है। 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है', 'एक प्लेट सैलाब' आदि उनकी चर्चित कहानियाँ हैं। राजेन्द्र यादव की कहानियों में सामाजिक यथार्थ की संवेदनात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति सुक्ष्म एवं परिस्कृत रूप में पायी जाती है। 'देवताओं की मूर्तियाँ', 'खेल–खिलौने', 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'अभिमन्यु की आत्महत्या', 'छोटे–छोटे ताजमहल', आदि कहानियाँ सामाजिक यथार्थ एवं जीवन मूल्यों को मानवीय धरातल पर प्रस्तुत करती है।

इन कहानियों के अतिरिक्त, मार्कंडेय के पान फूल, महुए का पेड़, हँसा जाई अकेला, भू–दान, बीच के लोग, उष प्रियंवदा की कहानी–'एक कोई दूसरी', 'शेषयात्रा', आदि, कृष्णा सोवती की कहानी 'बादल के घेरे', 'यारों के यार', 'सिल्का बदल गया' आदि, भीष्म साहनी की कहानी–'भाग्य रेखा', 'पहला पाठ', 'भटकती राख' आदि, धर्मवर भारती की कहानी 'बंद गली का आखरी महान' आदि कहानियों में विचारों की एक नवक्रांति का सपना जुड़ा हुआ है।

<u>अकहानी</u> : अकहानी आंदोलन साठोत्तरी मोहभंग की मानसिकता की उपज है। सन् 1960 के बाद हिन्दी कहानी के विकासक्रम में एक नया आयाम है। इसके रचनाकारों की कहानियों में मानव पीड़न और अस्तित्व खोज की अभिव्यक्ति, भयावह यथार्थ का अंकन, परंपरागत मूल्यों का विरोध और शिल्पहीन शिल्प विधान आदि की प्रधानता रही है।

अकहानी के पात्र घोर व्यक्तिवादी, आत्म केंद्रित, आत्मनिष्ठ तथा अपने–आप में ही सिमटे हुए हैं। वे यह मान लेते हैं कि जीवन अब, संत्रास और घुटन के सिवा और कुछ नहीं है। दूधनाथ सिंह की 'रक्तपात' तथा 'सूखांत' आदि कहानियों में माँ के प्रति तिरस्कार का भाव है। ज्ञानरंजन के 'पिता कहानी', कहानी पिता के प्रति संतान का दृष्टिकोण बदला हुआ है। गंगा प्रसाद विमल की शीर्षकहीन कहानी में पुत्र का पिता के साथ शराब पीना और तोहफे के

तौर पर एक औरत देने का सोचना विचित्र और धक्का पहुँचाने वाला है। अतः कहा जा सकता है कि अकहानी के रचनाकारों ने पश्चिम के एब्सर्ड या निरर्थकता बोध को अपनाया। उनकी कहानियों में अभिव्यक्ति की निरर्थकता, भावों की अपूर्णता, जीवन की विसंगति, व्यक्तित्व का विघटन, संभोग दृश्यों तथा यौन–संबंधों की विचित्रताओं से युक्त जो कहानियाँ आयी, वे अपने तत्कालीन समाज से परे होने के कारण उसकी यात्रा ज्यादा दिन नहीं चली।

सचेतन कहानी : इसका प्रारंभ 1964 ई० में प्रकाशित आधार पत्रिका के 'सचेतन कहानी विशेषांक' के प्रकाशन से माना जाता है। जिसके संपादक डॉ० महीप सिंह थें। महीप सिंह की दृष्टि से–'सचेतन आंदोलन मूलतः विचार प्रधान आंदोलन है, तथा सचेतन एक दृष्टि है। वह दृष्टि जिसमें जीवन जीया भी जाता है और जाना भी जाता है। जीवन की योजना मनुष्य की अपरिहार्य नियति है, वह इस जीवन को कैसे जिये? दृष्टि की सचेतनता, शायद इसका उत्तर है।"

कथ्य के स्तर पर सचेतन कहानी का फलक बहुआयामी है। यह भारतीय जीवन मूल्यों के विघटन को नगरीय तथा महानगरीय परिवेश में देखती है, किंतु विघटन को लेकर उसमें न गुस्से का भाव है न आश्चर्य का। वह इस विघटन को लेकर सहजता से स्वीकार कर सहजता से अभिव्यक्त करती है, जिसे हम महिप सिंह की कहानी "धुंधले कोहरे" में देख सकते हैं। इस कहानी में महानगरीय जीवन में मित्रों, पिता–पुत्र तथा माँ–बेटे के संबंधों में आये बदलाव को पूरी निरसंगता और तटस्थता से उभारा गया है।

सहज कहानी : सहज कहानी आंदोलन का सूत्रपात अमृतराय ने 1968 ई० में 'नयी कहानियाँ' मासिक पत्रिका के माध्यम से किया। यह कहानी आंदोलन अमृतराय द्वारा 'नयी कहानियाँ' में लिखी गयी संपादकीय टिप्पणी तक ही सीमित रहा। इन्होनें सहज कथ्य को सहज अभिव्यक्ति पर बल दिया और कहानी का जो शस्त्र प्रस्तुत किया वह केवल वैचारिक स्तर पर ही रह गये। कहानी के रचनात्मक स्तर पर उनके विचारों को समर्थन नहीं मिला।

सामांतर कहानी : सामान्यतः सन् 1972 में सामांतर कहानी का आरंभ माना जाता है। सामांतर कहानी का प्रवर्तक कमलेश्वर थें और 'सारिका' पत्रिका के माध्यम से यह कहानी आंदोलन ने अपनी गति पकड़ी।

कथा–लेखन में एक ऐसा वर्ग जो उपेक्षित होते जा रहा या पर्याप्त साधन नहीं पा रहा था। जो सामाजिक दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखता है। सामांतर कहानी में इस उपेक्षित वर्ग को 'आम आदमी' के रूप में स्वीकारा गया। उस आम आदमी को जो गाँवों, कस्बों, नगरों, महानगरों सबसे अपना संबंध रखता है, जो सब जगह मौजूद है। अपनी स्थितियों और परिस्थितियों के साथ। "आम आदमी" के आसपास "आज की कहानियाँ" सामांतर कहानी का सूत्र–वाक्य हो गया। इस कहानी से जुड़े कहानीकारों में प्रमुख नाम है–कमलेश्वर, कामतानाथ, मधुकर सिंह, हृयेश, बसंत कुमार।

कमलेश्वर की 'जोखिम', 'ब्यान', 'इतने अच्छे दिन' आदि कहानियाँ आम आदमी के संघर्ष को जीवन की समग्रता में देखती है तथा ये कहानियाँ अश्वत करती है कि नया युग नये प्रश्नों का सामना कर रहा है। मधुकर सिंह की कहानी–'भाई का जख्म' और अन्य कहानियों में आम आदमी के संघर्ष के साथ समग्र सामाजिक तंत्र को कुशलता पूर्वक उभारा गया है। सामांतर कहानी किसी भावूक विकल्प को नहीं चुनती, वह जीवन की सच्चाई की क्रूरता को व्यक्त करती है।

जनवादी कहानी : जनवादी कहानी सामान्य जन की पक्षकार है। यह आंदोलन समकालीन, शोषणमूलक व्यवस्था के भ्रष्ट परिवेश की उपज है। इस कहानी आंदोलन का उदय आठवें दशक में देखने को मिलता है। यह आंदोलन प्रेमचंदीय परंपरा को आगे बढ़ाने का काम किया है।

जनवादी कहानी ने आम आदमी के संघर्ष को समांतर कहानी की भाँति कृतिमता से न गढ़कर सहज रूप से अभिव्यक्त किया। जनवादी कहानीकार भाषा एवं शिल्प के प्रति पूर्ववर्ती कहानिकारों की अपेक्षा सजग है। काशीनाथ सिंह की 'सुबह का डर' तथा अन्य कहानी, स्वयं

प्रकाश की–'अम्मा कैसे कैसे', और 'सूरज कब निकलेगा' आदि ऐसी कहानियाँ है जिनमें अनुभव और विचार का सामंजस्य जीवन की समस्याओं के संदर्भ में देखा जा सकता है।

सक्रिय कहानी : सन् 1979 ई० में राकेश वत्स ने मंच पत्रिका के माध्यम से सक्रिय कहानी आंदोलन के नाम से एक नया कहानी आंदोलन चलाया। उनके अनुसार सक्रिय कहानी चेतनात्मक उर्जा और जीवंतता की कहानी है।"

सक्रिय कहानी अपना संबंध फणेश्वरनाथ रेणू और नागार्जून से जोड़ती है। वह वाम चेतना को अपनाती है, लेकिन मार्क्सवाद या अन्य किसी वाद में जकड़ना नहीं चाहती। यह कहानी समाज में व्यापक शोषण के विरूद्ध आवाज उठाती है और शोषण के कारणों को रेखांकित करती है। उदाहरण स्वरूप राकेश वत्स की कहानी 'काले पेड़', रमेश बतरा 'जंगली जुगरा किया' कहानी, धीरेन्द्र अस्थाना की 'लोग हाशिए पर' आदि कहानियों को देखा जा सकता है।

अतः कहा जा सकता है कि नयी कहानी आंदोलन समय के साथ बदला हुआ दिखाई देता है और उसके बाद की कहानी आंदोलन अपने समय में उभरा और अपनी खास विशेषताओं के कारण अपनी सीमाओं में बंधा रहा। फलस्वरूप कोई भी आंदोलन सफलता के साथ भले ही बहुत दिनों तक नहीं चल पाया, मगर नयी कहानी आंदोलनों ने हिन्दी कहानी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रस्तुतकर्ता
डॉ० कंचन कुमारी
अतिथि शिक्षक
हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना
E-mail Id : kanchanroycool@gmail.com